Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 5.146
Volume - 5, Issue - 5, MAY - 2022 Publication Date: 31/05/2022

DOIs:10.2018/SS/202205009 --:-- Research Article

औषध व्यसन एवं गैर औषध व्यसन व्यक्तियों के संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन का अध्ययन

[1]मोहम्मद कमाल अली, [2]शाफ़िया अंजुम

[1] स्नातकोत्तर, मनोविज्ञान, महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश.
[2] मनोवैज्ञानिक, निर्वाण हॉस्पिटल एवं नशा मुक्ति केंद्र, बरेली, उत्तर प्रदेश.
Email – [1]kamaalalizaidi@gmail.com, [1]syedashafiya79420@gmail.com

सार: *प्राचीन काल से वर्तमान काल तक उपचार के लिए औषधियों का उपयोग होता रहा है, जिससे व्यक्ति का औषधियों के संपर्क मे आना स्वाभाविक है। नियमित दीर्घ समय तक इन औषधियों का उपयोग यदि बिना किसी चिकित्सीय लाभ के किया जाये तो इनके प्रति निर्भरता उत्पन्न हो जाती है, इसे औषधि व्यसन कहते हैं। जिसके चलते व्यक्ति में अनेकों समस्याएँ उत्पन्न होने लगती हैं। औषध व्यसन से व्यक्ति के संवेगात्मक बुद्दि एवं समायोजन पर पड़ने वाले प्रभावों को जानने के लिए अध्ययन में सर्वेक्षण अनुसंधान विधि को उपयोग में लिया गया। शोध में बरेली जिले के 60 औषध व्यसन एवं 60 गैर औषध व्यसन व्यक्तियों को यादृच्छिकृत प्रतिचयन विधि द्वारा प्रतिदर्श के रूप मे चुना गया। जिनमे पुरुषों एवं महिलाओं की संख्या को समान रखा गया। दोनों समूहों पर मंगल एवं मंगल की संवेगात्मक बुद्धि मापनी एवं कुमार की संशोधित समायोजन मापनी का प्रशासन किया गया। प्राप्त आंकड़ो का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या कर परिणामों मे पाया कि औषध व्यसन व्यक्तियों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर गैर औषध व्यसन व्यक्तियों से निम्न पाया एवं औषध व्यसन व्यक्तियों का समायोजन भी गैर औषध व्यसन व्यक्तियों की तुलना मे खराब पाया गया। साथ ही औषध व्यसन व्यक्तियों के संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन पर उनके लिंग का कोई प्रभाव नहीं देखा गया।*

संकेत शब्द: *औषध व्यसन, संवेगात्मक बुद्धि, समायोजन, तुलनात्मक अध्ययन, लिंग प्रभाव, गैर औषध व्यसन।*

1. प्रस्तावना :

समाज में नशीली औषधियों के सेवन की परंपरा अति प्राचीन है। प्राचीन काल में चिकित्सक रोगों के उपचार में नशीली औषधियों का प्रयोग करते थे। परंतु नशीली औषधियों का दुरुपयोग व्यक्ति पर हानिकारक प्रभाव डालता है। दुरुपयोग से यहाँ तात्पर्य है किसी औषधि का ऐसा सेवन जो बिना किसी आवश्यकता के तथा बिना किसी चिकित्सीय लाभ के अनिश्चित, नियमित तथा अत्यधिक मात्रा में सेवन किये जाने से है। औषधि दुरुपयोग से पड़ने वाले हानिकारक प्रभाव शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा नैतिक भी हो सकते हैं। दीर्घकाल तक यदि व्यक्ति औषध दुरुपयोग करता रहता है तो, इसके कारण उसमें एक विशेष अवस्था का जन्म होता है। जिसे औषध व्यसन कहते हैं।

1.1 औषध व्यसन

आधुनिक युग में विकास की गति में वृद्धि के साथ ही असामाजिक कृत्यों में भी उल्लेखनीय वृद्धि हो रही है। विभिन्न प्रकार के अपराध, मद्यपान तथा औषधि व्यसन के कारण समाज में दिन प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं और एक बड़ी समस्या के रूप में सामने आ रहे हैं। मादक औषधियों का अधिक मात्रा में प्रयोग समाज के लिए एक समस्या बन गया है।किसी औषधि पर निर्भरता जब मनोवैज्ञानिक, सामाजिक अथवा शारीरिक समस्या उत्पन्न करती है तो यह चिंता का विषय होता है।सामान्य तौर पर निर्भरता का तात्पर्य किसी औषधि विशेष द्वारा मनोवैज्ञानिक सहायता प्राप्त करना है, जबकि औषध व्यसन परिहार के लक्षणों को इंगित करता है। अब औषधि निर्भरता का संबंध मनोवैज्ञानिक और शारीरिक दोनों पक्षों से है। औषधि दुरुपयोग शब्द का प्रयोग उस समय किया जाता है जब किसी औषधि का बहुत अधिक सेवन कर लिया जाए इसमें यह आवश्यक नहीं है कि व्यक्ति वास्तव में उस औषधि पर निर्भर करता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन WHO (1969) ने औषधि एवं औषधि निर्भरता की परिभाषा इस प्रकार दी है – *"औषधि वह कोई भी पदार्थ है जो जीवित प्राणी के अंदर ग्रहण किए जाने पर उसके एक अथवा अधिक पर प्रकार्यों में परिवर्तन ला सके।"*

1.2 संवेगात्मक बुद्धि

मनुष्य में कुछ विशेष मानसिक शक्तियां पाई जाती हैं जो उन्हें अन्य जीवों से अलग करती है मनुष्य सोच सकता है, समझ सकता है, चीजों में विभेद, अंतर कर सकता है तथा नई परिस्थितियों के साथ सामंजस्य स्थापित कर सकता है। ऐसी कुछ शक्तियां

हैं जो मनुष्य को यह सब करने योग्य बनाती है, कोई गुण है जो मनुष्य को जीवों से अधिक गुणवान बनाता है। इसमें दो राय नहीं कि मनुष्य का ज्ञान, अभिव्यक्ति, कौशल इस कार्य में योगदान देते हैं, परंतु वह विशेष गुण जो मनुष्य को एक विवेकी प्राणी बनाता है वह बुद्धि जिसे ऋषियों ने विवेक की संज्ञा दी है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार मनुष्य की मानसिक शक्तियों का यह हिस्सा जो उसे सामाजिक रूप से कुशल बनाता है तथा दूसरों के संवेगों को समझने मे मदद करता है, संवेगात्मक बुद्धि कहलाता है। संवेगात्मक बुद्धि शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम वेन पाईन के वैज्ञानिक शोध पत्र मे हुआ था।

गोलमैन (1980) के अनुसार, *"मनुष्य की मानसिक शक्तियों का यह हिस्सा जो उसे सामाजिक रूप से कुशल बनाता है तथा दूसरों के संवेगों को समझने मे मदद करता है, संवेगात्मक बुद्धि कहलाता है।"*

1.3 समायोजन

व्यक्ति की कुछ क्रियाएं ऐसी होती हैं जिनके लिए उसे प्रयास नहीं करना पड़ता जबकि कुछ क्रियाएं ऐसी भी हैं जो बिना प्रयास के क्रियान्वित नहीं हो सकती। व्यक्ति अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रयास करता है उद्देश्य प्राप्ति के लिए किए जा रहे प्रयास में मानसिक तत्परता एवं तनाव पाया जाता है उद्देश्य की प्राप्ति में अनेक प्रकार के अवरोधों का सामना व्यक्ति को करना पड़ता है उद्देश्य की प्राप्ति पर व्यक्ति को सुख एवं विफलता पर निराशा की उत्पत्ति होती है। जिससे व्यक्ति में असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। समायोजन का तात्पर्य परिस्थिति के अनुकूल चलना या फिर परिस्थिति को अपने अनुकूल बना लेना है विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा समायोजन को अपने अपने अनुसार वर्णित किया गया है।

इंग्लिश एवं इंग्लिश (1958) के अनुसार, *"प्राणी और उसके पर्यावरण में विद्यमान साम्य को समायोजन के नाम से जाना जाता है।"*

2. संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण :

हुसैनी एवं अंसारी (2011) ने संवेगात्मक बुद्धि, अस्थिर व्यक्तित्व का औषध व्यसन से संबन्धों का अध्ययन किया। अध्ययन में ईरान के विभिन्न शहरों के सामुदायिक केन्द्रों के 80 पुरुषों को उपलब्धता प्रतिचयन विधि द्वारा चुना गया। चरों के मापन के लिए वारेन वयस्क प्रश्नावली एवं आइंजेक व्यक्तित्व प्रश्नावली का प्रशासन किया। प्राप्त आंकड़ो का विश्लेषण कर परिणाम में पाया कि संवेगात्मक बुद्धि तथा विकृत व्यक्तित्व का औषध व्यसन के साथ नकारात्मक सहसंबंध था।

ब्राउन एवं अन्य (2012) ने निम्न संवेगात्मक बुद्धि के प्रमुख कारणो के रूप में मद्यपान एवं औषध निर्भरता का अध्ययन किया। गोलमैन (1995) के अभिकथन - *"निम्न संवेगात्मक बुद्धि मद्यपान एवं औषध व्यसन का प्रमुख कारण है।"* की पुष्टि हेतु औषध व्यसन एवं मद्यपान पुनर्वास केंद्र के 103 प्रवासी रोगियों पर अध्ययन किया। रोगियों के संवेगात्मक बुद्धिमत्ता, मनोवैज्ञानिक संकट एवं पाँच करकीय व्यक्तित्व का मापन किया गया। प्रत्येक व्यक्ति के संवेगात्मक बुद्धि, मनोवैज्ञानिक संकट एवं पाँच करकीय व्यक्तित्व की तुलना उसके स्वस्थ्य होने से की गयी। एक माह के बाद पाया कि रोगियों के संवेगात्मक बुद्धि, मनोवैज्ञानिक संकट एवं पाँच करकीय व्यक्तित्व के स्तरों मे सार्थक बढोत्तरी हुई।

सिल्वा एवं अमिनाभावी (2013) ने औषध व्यसन किशोरों में समायोजन, आत्मा प्रभाविता एवं मनोसामाजिक योग्यता का अध्ययन किया। अध्ययन में गोवा राज्य के मापुसा क्षेत्र से संबन्धित 80 किशोरों पर समायोजन मापनी, आत्म प्रभाविकता एवं मनोसामाजिक योग्यता मापनी का प्रशासन किया। परिणामों में औषध व्यसन एवं समान्य किशोरों के समायोजन, आत्मप्रभाविता एवं मनोसामाजिक योग्यता में सार्थक अंतर पाया। औषध व्यसन किशोरों का समायोजन,आत्मप्रभाविता एवं मनोसामाजिक योग्यता गैर औषध व्यसन किशोरों से निम्न पायी गयी।

नबिए, करामफ़रोज़ एवं अफ़शर्निया (2014) ने औषध व्यसन एवं गैर औषध व्यसन व्यक्तियों में संवेगात्मक बुद्धि एवं कठोरता का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन मे ईरान के केर्मशा नगर के औषध मुक्ति केन्द्रो के 80 औषद्य व्यसन एवं 80 गैर औषध व्यसन व्यक्तियों को सुविधानुसार प्रतिचयन विधि द्वारा चुना गया।दोनों समूहो पर पेटेंट्स एवं फार्म की संवेगात्मक बुद्धि प्रश्नावली एवं कोबरा की 80 पद कठोरता प्रश्नावली का प्रशासन किया गया। परिणामो मे पाया कि औषध व्यसन एवं गैर औषध व्यसन व्यक्तियों के संवेगात्मक बुद्धि एवं कठोरता मे सार्थक अंतर था। औषध व्यसन व्यक्तियों के संवेगत्मक बुद्धि एवं कठोरता समान्य व्यक्तियों की अपेक्षा कम पायी गयी।

डेलवेचियो एवं अन्य (2016) ने औषध व्यसन रोगियों के वयस्क आकर्षण, सामाजिक समायोजन एवं स्वास्थ्य का अध्ययन किया। अध्ययन में 20 से 50 वर्ष के 28 पुरुषों एवं 12 महिलाओं पर आकर्षण प्रक्षेपी चित्र पद्धति, सामाजिक समायोजन मापनी एवं सामान्य औषध व्यसन स्वास्थ्य प्रश्नावली-28 का प्रशासन किया गया। प्राप्त आंकड़ो का विश्लेषण कर परिणामों में पाया कि रोगियों मे वयस्क आकर्षण के प्रति भय, प्रक्षेपण शक्ति की कमी एवं निस्साहायता देखी गई एवं रोगियों में कुसमायोजन एवं दुविधाजनक स्वास्थ्य सार्थक रूप से उच्च पाया गया।

इस्माइल एवं नसीम (2017) ने औषध व्यसन एवं सामान्य महिलाओं पर सामाजिक समायोजन, आत्म नियमन एवं धार्मिक आस्था का अध्ययन किया। अध्ययन के लिए उर्मिया नगर की 200 महिलाओं के दो समूहों को मॉर्गन तालिका द्वारा यद्यच्छिक रूप से

चुनकर बेल सामाजिक समायोजन प्रश्नावली, मिलर एवं ब्राउन आत्म नियमन प्रशनावली एवं क्लार्ग धार्मिक धारणा प्रश्नावली का प्रशासन किया। अकड़ो का विश्लेषण कर दोनों समूहों के बीच सार्थक अंतर पाया। सामान्य महिलाओं का समायोजन, आत्म नियमन एवं धार्मिक आस्था औषध व्यसन महिलाओं से अधिक पायी गयी।

जमशेद एवं फरीद (2019) ने हाईस्कूल विद्यार्थियों के औषध व्यसन के समरूपता संकट एवं संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन किया। अध्ययन मे तेहरान शहर के 385 हाईस्कूल के विधर्थियों को गुच्छ प्रतिदर्श चयन विधि द्वारा चुनकर अहमदी समरूपता संकट प्रशनावली, ब्राडबुर्य ग्रेव्स संवेगात्मक बुद्धि प्रशनावली एवं पदार्थ उपयोग प्रवृत्ति मापनी का प्रशासन किया। विश्लेषण कर परिणामों मे पाया कि समरूपता संकट और संवेगात्मक बुद्धि, औषध व्यसन से सार्थक रूप से संबन्धित है। प्रतिगमन विश्लेषण के परिणामों ने पूर्व संकेत दिये कि सामाजिक जागरूकता, समरूपता संकट एवं संबंधों के प्रबंध में औषध संवेदनशीलता के कारण 26 प्रतिशत तक परिवर्तन आने की संभावना जताई गई।

स्टफ एवं अन्य (2020) ने किशोरावस्था के दौरान इलैक्ट्रानिक सिगरेट एवं दहनशील सिगरेट के उपभोग का समायोजन, बाल अपराध एवं अन्य औषध व्यसन से संबंधों का अध्ययन किया। यूनाइटेड किंगडम के 14 वर्ष की आयु के 11,564 किशोरों पर अनुधैर्य विधि का प्रयोग किया। परिणामो मे पाया कि इलैक्ट्रानिक सिगरेट के उपभोग का प्रचलन 7% किशोरों मे था जिनमे से 75% किशोर अन्य औषध व्यसन की समस्या से ग्रसित थे एवं किशोरों मे गंभीर समायोजन समस्याओं एवं बाल अपराध की उच्च प्रवृत्ति पायी। जबकि दहनशील सिगरेट का उपभोग 18% किशोरों में प्रचलित था जिनमे समायोजन समस्याओं एवं बाल अपराध की निम्न प्रवृत्ति पायी गयी।

3. अनुसंधान अभिकल्प :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में अनुप्रस्थ-काट अनुसंधान अभिकल्प का प्रयोग किया गया है।

3.1 समस्या का कथन

"औषध व्यसन एवं गैर औषध व्यसन व्यक्तियों के संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन का अध्ययन।"

3.2 पदों की परिभाषा

1. **औषध व्यसन -** "औषध व्यसन ऐसे पदार्थ का दुरुपयोग करना है जो व्यक्ति के एक या अधिक प्रकार्यों में परिवर्तन लाता है।"
2. **संवेगात्मक बुद्धि -** "व्यक्ति को सामाजिक रूप से कुशल बनाने तथा संवेगों की समझ विकसित करने वाली योग्यता को संवेगात्मक बुद्धि कहते हैं।"
3. **समायोजन -** "समायोजन ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं एवं पर्यावरण के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है।"

3.3 अध्ययन की आवश्यकता एवं सार्थकता

वर्तमान समय मे विश्व मे लगभग 3.5 करोड़ व्यक्ति किसी न किसी प्रकार के औषध व्यसन का शिकार बने हुए हैं। लड़ाई दंगे, हत्या, बलात्कार जैसे अपराधों को भी औषद्यि व्यसन द्वारा जन्म दिया जाता है। औषधियों के दुरुपयोग से व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक,सामाजिक एवं नैतिक पक्षो पर सार्थक रूप से प्रभाव पड़ता है। जिसके कारण औषध व्यसन व्यक्ति के आचार-विचार एवं व्यवहार मे अनेक स्थाई तथा आस्थाई परिवर्तन देखने को मिलते हैं। जिसके साथ ही व्यक्ति की मानसिक एवं शारीरिक क्रियाएँ भी मंद या फिर तीव्र हो जातीं हैं। औषध व्यसन के मानसिक प्रभावों मे संवेगों से जुड़ी समस्याओं को जानने के लिए संवेगात्मक बुद्धि पर औषध व्यसन के प्रभावों का अध्ययन अपने आप में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। औषध व्यसन व्यक्तियों को वातावरण संबंधी समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। समाज एवं वातावरण मे व्यक्तियों के समायोजन को प्रभावित करने मे औषध व्यसन के महत्व को भी जानना आवश्यक है। इसके साथ ही औषध व्यसन करने वाले व्यक्तियों पर उनके लिंग का यदि कोई प्रभाव पड़ता है तो उस द्रष्टि से भी प्रस्तुत अध्ययन आवश्यक है।

3.4 शोध विधि

इस शोध अध्ययन में सर्वेक्षण अनुसंधान विधि को उपयोग में लाया गया।

3.5 शोध प्रश्न

1. औषध व्यसन एवं गैर औषध व्यसन व्यक्तियों के संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन में क्या अंतर है?
2. औषध व्यसन व्यक्तियों के संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन पर उनके लिंग का क्या प्रभाव पड़ता है?

3.6 अध्ययन के उद्देश्य

1. औषध व्यसन एवं गैर औषध व्यसन व्यक्तियों के संवेगात्मक बुद्धि की तुलना करना।
2. औषध व्यसन एवं गैर औषध व्यसन व्यक्तियों के समायोजन की तुलना करना।

3. औषध व्यसन व्यक्तियों के संवेगात्मक बुद्धि की लिंग के आधार पर तुलना करना।
4. औषध व्यसन व्यक्तियों के समायोजन की लिंग के आधार पर तुलना करना।

3.7 परिकल्पनाएं

1. औषध व्यसन एवं गैर औषध व्यसन व्यक्तियों के संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
2. औषध व्यसन एवं गैर औषध व्यसन व्यक्तियों के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।
3. औषध व्यसन पुरुषों एवं औषध व्यसन महिलाओं के संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
4. औषध व्यसन पुरुषों एवं औषध व्यसन महिलाओं के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।

3.8 चर

स्वतंत्र चर - औषध व्यसन एवं गैर औषध व्यसन व्यक्ति।
आश्रित चर - संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन।

3.9 प्रतिदर्श

अध्ययन में प्रतिदर्श का आकार 120 रखा गया जिसमें बरेली जिले के 16 से 25 वर्ष के 60 औषध व्यसन तथा 60 गैर औषध व्यसन व्यक्तियों को प्रतिदर्श के रूप में चुना गया। प्रत्येक समूह मे पुरुषो एवं महिलाओं की संख्या को समान रखा गया। प्रतिदर्श के चयन में यादृच्छिकृत प्रतिचयन विधि को प्रयोग में लाया गया। प्रतिदर्श समूहों का वितरण तालिका – 1 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका – 1 प्रतिदर्श समूहों का वितरण।

समूह	औषध व्यसन	गैर औषध व्यसन	योग
पुरुष	30	30	60
महिलाएं	30	30	60
योग	60	60	**120**

3.10 अध्ययन के उपकरण

- **संवेगात्मक बुद्धि मापनी -** संवेगात्मक बुद्धि के मापन के लिए मंगल एवं मंगल की संवेगात्मक बुद्धि मापनी (2012) का हिंदी संस्करण उपयोग किया गया,जो 16 वर्ष या उससे अधिक आयु के व्यक्तियों पर प्रशासित की जा सकती है। यह मापनी 1150 पुरुषों एवं 1150 महिलाओं, कुल 2200 व्यक्तियों पर मानकीकृत की जा चुकी है। इस मापनी मे 100 पद रखे गए हैं जो संवेगो की समझ, प्रेरणा की समझ, सहानुभूति एवं संबंधों को संभालने के कौशल से संबंधित हैं। मापनी मे हर एक पद के केवल दो विकल्प 'हाँ' एवं 'नहीं' दिये गये हैं। मापनी की विश्वसनीयता की जांच तीन अलग विधियों द्वारा की गयी। अर्द्ध विच्छेद विधि द्वारा 600 प्रयोज्यों के प्रतिदर्श पर विश्वसनीयता गुणांक .89 पाया। कुडर रिचर्डसन सूत्र-20 द्वारा 600 प्रयोज्यों के प्रतिदर्श पर विश्वसनीयता गुणांक .90 पाया। परीक्षण पुनः परीक्षण विधि द्वारा (चार सप्ताह के अंतराल पर) 200 प्रयोज्यों के प्रतिदर्श पर विश्वसनीयता गुणांक.92 पाया। मापनी की वैधता की जांच दो विभिन्न उपागमों द्वारा की गयी, कारकीय उपागम में मापनी के चारों क्षेत्रों के पदों का अन्तः सह-सम्बंध .437 से .716 के बीच पाया। जोकि 0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक है। मानदण्ड संदर्भित उपागम द्वारा वैधता की जांच दो बाहरी मापनियो (सिन्हा एवं सिंह की 'कॉलेज छात्रों के लिए समायोजन मापनी' तथा सिंह एवं भार्गव की 'संवेगात्मक परिपक्वता मापनी) से करने पर वैधता गुणांक क्रमशा -0.662 एवं -0.613 पाया गया।
- **समायोजन मापनी -** समायोजन के मापन के लिए कुमार की संशोधित समायोजन मापनी (1999) के हिंदी संस्करण को उपयोग में लिया गया। जिसका प्रशासन किसी भी आयु वर्ग के व्यक्तियों पर किया जा सकता है। इस मापनी में कुल 40 पद रखे गए हैं, जो संवेगात्मक एवं सामाजिक समायोजन से संबंधित है। प्रस्तुत मापनी की विश्वसनीयता की जांच दो अलग अलग विधियों द्वारा की गयी। अर्द्ध विच्छेद विधि द्वारा 108 पुरुषों के प्रतिदर्श पर स्पेयरमैन ब्राउन सूत्र के प्रयोग से परीक्षण की विश्वसनीयता .83 पायी गयी। मापनी की विश्वसनीयता परीक्षण पुनः परीक्षण विधि द्वारा 63 पुरुषों के प्रतिदर्श पर एक सप्ताह के अंतराल पर .81 तथा 51 महिलाओं के प्रतिदर्श पर दो सप्ताह के अंतराल पर .74 पाई गयी। मापनी की मानदण्ड संदर्भित उपागम द्वारा वैधता की जांच अस्थाना की 'हिन्दुस्तानी समायोजन मापनी' से करने पर वैधता गुणांक .71 पाया गया।

3.11 शोध प्रक्रिया

औषध व्यसन एवं गैर औषध व्यसन व्यक्तियों के संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन का अध्ययन करने के लिए संबन्धित विषय पर पूर्व मे हुए अध्ययनो का सर्वेक्षण कर शोध अध्ययन की समस्या को परिभाषित किया गया। अध्ययन के लिए परिकल्पनाओ का निर्माण किया गया। परिकल्पनाओ की जांच के लिए सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का उपयोग करते हुए बरेली जिले के 60 औषध

व्यसन तथा 60 गैर औषध व्यसन व्यक्तियों (जिनमे 60 पुरुषों एवं 60 महिलाओं) को यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा चुनकर उपर्युक्त निर्देश देते हुए संवेगात्मक बुद्धि मापनी एवं संशोधित समायोजन मापनी का प्रशासन किया गया। प्राप्त अनुक्रियाओं का फलांकन करने के पश्चात प्राप्त आंकड़ो का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या कर परिणामो को प्राप्त किया गया।

4. सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या

फलांकन के पश्चात आंकड़ो का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया, जिसके लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-मान की गणना की गयी, गणना मे प्राप्त आंकड़ो को तालिका – 2 मे दर्शाया गया है।

तालिका – 2 चरों से संबन्धित समूहो के मध्यमान, मानक विचलन तथा टी-मान।

चर	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-मान
संवेगात्मक बुद्धि	औषध व्यसन व्यक्ति	60	56.55	5.12	**8.32***
	गैर औषध व्यसन व्यक्ति	60	64.93	5.89	
	औषध व्यसन पुरुष	30	57.03	5.14	**0.73**
	औषध व्यसन महिलाएं	30	56.06	5.13	
समायोजन	औषध व्यसन व्यक्ति	60	22.10	4.57	**5.39***
	गैर औषध व्यसन व्यक्ति	60	26.95	5.26	
	औषध व्यसन पुरुष	30	22.63	4.46	**0.90**
	औषध व्यसन महिलाएं	30	21.57	4.70	

*0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक

औषध व्यसन एवं गैर औषध व्यसन व्यक्तियों के संवेगात्मक बुद्धि से संबन्धित आंकड़ों का विश्लेषण करने पर टी-मान 8.32 प्राप्त हुआ, जो 0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना - 1 अस्वीकृत होती है। दोनों समूहों के संवेगात्मक बुद्धि के स्तर मे सार्थक अंतर पाया। गैर औषध व्यसन व्यक्तियों के संवेगात्मक बुद्धि का स्तर औषध व्यसन व्यक्तियों की तुलना मे अधिक पाया। जैसा कि जमशेद एवं फरीद (2019), नबिए, करामफ़रोज़ एवं अफ़्शर्निया (2014), ब्राउन एवं अन्य (2012) और हुसैनी एवं अंसारी (2011) के अध्ययनों में देखा गया कि औषध व्यसन करने वाले व्यक्तियों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर गैर औषध व्यसन व्यक्तियों से निम्न पाया।

औषध व्यसन एवं गैर औषध व्यसन व्यक्तियों के समायोजन से संबन्धित आंकड़ों का विश्लेषण करने पर टी-मान 5.39 प्राप्त हुआ जोकि 0.01 विश्वास स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना - 2 अस्वीकृत की जाती है। दोनों समूहों के समायोजन मे सार्थक अंतर पाया गया। गैर औषध व्यसन व्यक्तियों का समायोजन औषध व्यसन व्यक्तियों की तुलना मे अधिक पाया गया। स्टफ एवं अन्य (2020), इस्माइल एवं नसीम (2017), डेलवेचियो एवं अन्य (2016) और सिल्वा एवं अमिनाभावी (2013) के अध्ययनों ने भी इस बात की पुष्टि की।

औषध व्यसन पुरुषों एवं औषध व्यसन महिलाओं के संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन से संबन्धित आंकड़ों का विश्लेषण करने पर टी-मान क्रमशा 0.73 एवं 0.90 प्राप्त हुआ, जो किसी भी विश्वास स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना - 3 एवं शून्य परिकल्पना - 4 स्वीकृत होती हैं। दोनों समूहों के संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के स्तर मे कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। औषध व्यसन पुरुषों एवं औषध व्यसन महिलाओं के संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन का स्तर समान पाया गया।

5. परिणाम :

अध्ययन में औषध व्यसन एवं गैर औषध व्यसन व्यक्तियों के संवेगात्मक बुद्धि के स्तर में सार्थक अंतर पाया। गैर औषध व्यसन व्यक्तियों के संवेगात्मक बुद्धि का स्तर औषध व्यसन व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक पाया। अर्थात गैर औषध व्यसन व्यक्तियों में अपने संवेगो की समझ, संवेगो का नियंत्रण एवं प्रबंध करने की क्षमता अधिक होती है।

औषध व्यसन एवं गैर औषध व्यसन व्यक्तियों के समायोजन में सार्थक अंतर पाया। गैर औषध व्यसन व्यक्तियों का समायोजन औषध व्यसन व्यक्तियों की अपेक्षा उत्तम पाया। गैर औषध व्यसन व्यक्ति अपने आप को वातावरण मे समायोजित करने एवं परिस्थिति से सामजस्य बैठने में अधिक सक्षम होते हैं।

औषध व्यसन पुरुषों एवं औषध व्यसन महिलाओं के संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया। दोनों के संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन का स्तर समान पाया। अतः दोनों समूहों के संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन पर उनके लिंग का कोई प्रभाव नही देखा गया।

6. निष्कर्ष :

औषध व्यसन एवं गैर औषध व्यसन व्यक्तियों के संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन के अध्ययन में प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण, व्याख्या एवं परिणामों से इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि औषध व्यसन व्यक्तियों की संवेगात्मक बुद्धि का स्तर गैर औषध व्यसन व्यक्तियों की अपेक्षा कम पाया। जिसके फलस्वरूप औषध व्यसन व्यक्तियों की संवेगात्मक बुद्धि निम्न होने के कारण उनका स्वयं के संवेगों की समझ न होना एवं उनका नियंत्रण व प्रबंध करने में असमर्थ रहते हैं। औषध व्यसन व्यक्तियों का समायोजन गैर औषध व्यसन व्यक्तियों की अपेक्षा खराब पाया गया। जिसके कारण औषध व्यसन करने वाले व्यक्ति गैर औषध व्यसन व्यक्तियों की भांति वातावरण में अच्छी तरह समायोजन करने मे असमर्थ पाये एवं उन्हे समायोजन स्थापित करने के लिए अपेक्षाकृत अधिक संघर्ष अधिक करना पड़ता है। औषध व्यसन पुरुषों एवं औषध व्यसन महिलाओं में संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन समान पाये गए, अतः औषध व्यसन व्यक्तियों के संवेगात्मक बुद्धि एवं समायोजन पर लिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

7. अध्ययन की परिसीमाएं :

1. प्रस्तुत अध्ययन में प्रतिदर्श का आकार केवल 120 रखा गया, जिनमे 60 औषध व्यसन एवं 60 गैर औषध व्यसन व्यक्ति को सम्मिलित किया गया।
2. प्रस्तुत अध्ययन मे प्रतिदर्श का चयन केवल बरेली जिले से किया गया।
3. प्रस्तुत अध्ययन में चरो के मापन हेतु मंगल एवं मंगल की संवेगात्मक बुद्धि मापनी एवं कुमार की संशोधित समायोजन मापनी का प्रयोग किया गया।

8. सुझाव

1. अध्ययन में प्रतिदर्श का आकार 120 रखा गया है अध्ययन को विस्तृत आकार के प्रतिदर्श पर भी किया जा सकता है।
2. अध्ययन में केवल 16 से 25 वर्ष की आयु के व्यक्तियों का चुनाव किया गया है। अध्ययन को विभिन्न आयु वर्गों पर भी संपादित किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत अध्ययन में महिलाओं एवं पुरुषों को सम्मिलित किया गया है। भविष्य में होने वाले अध्ययनों में तृतीय लिंग को भी सम्मिलित किया जा सकता है।
4. अध्ययन में प्रतिदर्श केवल बरेली जिले से ही लिया गया है। इस अध्ययन को अन्य क्षेत्रों में एवं राज्यीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर भी किया जा सकता है।

आभार

लेखक उन सबके प्रति आभार प्रकट करते हैं जिन्होने इस शोध अध्ययन में भाग लिया एवं शोध प्रक्रिया में आवश्यक सहायता प्रदान की।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. अहूजा, राम. (2010). *सामाजिक अनुसंधान,* रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।
2. आर्य, मोहन लाल. (2017). अधिगम एवं शिक्षण, आर लाल बुक डिपो, मेरठ।
3. अस्थाना, विपिन. (2014). *प्रयोगात्मक रीति विधान और सांख्यिकी,* अग्रवाल पब्लिकेशन्स,आगरा।
4. भटनागर, ए., बी., भटनागर, मीनक्षी., भटनागर, अनुराग. (2012). *अधिगम कर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया,* आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
5. कुमार, प्रमोद. (1999). *संशोधित समायोजन मापनी,* प्रसाद साइको कॉरपोरेशन, दिल्ली।
6. महाजन, संजीव. (2016). *सामाजिक अनुसंधान, सर्वेक्षण एवं सांख्यिकी,* अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
7. मंगल, एस. के., मंगल, शुभ्रा. (2012). *संवेगात्मक बुद्धि मापनी,* नेशलन साइकोलोजिकल कार्पोरेशन, आगरा।
8. मंगल, एस. के., मंगल, शुभ्रा. (2017). *व्यावहारिक विज्ञान में अनुसंधान विधियां,* पीएचआई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड दिल्ली।
9. सिंह, अरुण कुमार. (2008). *व्यावहारिक मनोविज्ञान,* मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
10. सिंह, राजेंद्र प्रसाद,. उपाध्याय, जितेंद्र कुमार., सिंह, राजेंद्र. (2015). *विकासात्मक मनोविज्ञान,* मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
11. सुलैमान, मोहम्मद., कुमार, दिनेश. (2017). *मनोविकृति विज्ञान,* मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

12. Brown, E., Chiu, E., Neill, L., Tobin, J., Reid, J. (2012). Is low Emotional Intelligence a primary causal factor in drug and alcohol addiction?.
13. Delvecchio, E., Di Riso, D., Lis, A., Salcuni, S. (2016). Adult attachment, social adjustment, and well-being in drug-addicted inpatients. *Psychological Reports*, *118*(2), 587-607.
14. SADRI, D. E., Mohammadi, N. (2017). Comparison of the Social Adjustment, Self-regulation and Religious Beliefs in Addicted and Normal Women in Urmia.
15. Haj Hosseini, F.,MehdizadehZareAnari, A. (2011). The Correlation between Emotional Intelligence and Instable Personality in Substance Abusers. *Addiction & health*, *3*(3-4), 130–136.
16. Jamshidi, H., Asgharnejad-Farid, A. A. (2019). The role of identity crisis and emotional intelligence in predicting substance abuse among high-school students. *Chronic Diseases Journal*, *7*(1), 16-21.
17. Nabiei, Anahita.,Karamafrooz, Mohammad.,Afsharnia, Karim. (2014). The Comparison of Emotional Intelligence and Hardiness in Addicts and Non-Addicts. Kuwait Chapter of Arabian Journal of Business and Management Review. 3. 196-204.
18. D'Silva, Jeronimo.,Aminabhavi, Vijayalaxmi. (2013). Adjustment, Self-efficacy and Psychosocial Competencys of Drug Addicted Adolescents. Journal of Psychology. 4. 13-18.
19. Staff, J., Maggs, J. L., Seto, C., Dillavou, J., Vuolo, M. (2020). Electronic and Combustible Cigarette Use in Adolescence: Links With Adjustment, Delinquency, and Other Substance Use. *The Journal of adolescent health : official publication of the Society for Adolescent Medicine*, *66*(1), 39–47.